भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-11, अंक-5 सोमवार, 25 मई' 88	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी मानद-सहसम्पादक: श्री महेन्द्र दवे	वार्षिक चन्दा: 10.00 प्रति अंक : 1.00

धन्य धन्य काकाजी.....

जिसकी निर्दोष, सौम्य, शीतल, हंसती मूर्ति प्रथम दर्शन में ही सबके हृदय पर अपना अधिकार कर लेती थी ऐसे हमारे प्राणस्वरूप प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन.....अर्थात् 12 जून !!! प.पू. काकाजी के गुणानुवाद का गान करना बहुत आसान है, मगर, वैसा जीवन जीना– वो तलवार की धार पर चलने जैसा कठिन है। प्रभु के पैगम्बर समान ऐसी दिव्य विभूति हमेशा निडर, निर्भय, निःस्वार्थ, महाप्रज्ञ, कृतनिश्चयी, दृढ़, असीम धैर्यवान, अद्‌भुत सामर्थ्यधारी, क्रांतिकारी, स्वाधीन, शूरवीर, एकधारी, प्रभुसभर, विनम्र, प्रभु की मूर्ति की खुमारी से भरपूर व स्वतन्त्र विहार करने वाली होती है। चैतन्य के विकासक्रम की गति में तीव्रता और वेग लाने वाले प्रयोगशील व प्रयोगवीर वैज्ञानिक होते हैं। केवल प्रभु को ही लक्ष्य में रखकर इस धरती के अणु-अणु में प्रभु का साम्राज्य प्रगट करने का एकमात्र लक्ष्य धारण करने वाले नरकेसरी होते हैं। ऐसी दिव्य विभूति एक नवीनतम व प्रभु के ही बल से चलने वाली व्यवस्था की समाज स्थापना करने के बीज बोती है। उन्हें कोई आश्रम या संस्था चलाने की इच्छा नहीं होती, बल्कि चेतना की आध्यात्मिक उन्नति के लिए, मानव से महामानव की कक्षा पर ले जाने ऐसे युगपुरुष सदा सर्वदा अनथक् परिश्रम करके निःस्वार्थ भाव से प्रयत्नशील रहते हैं। उन्हें जन्म नहीं होता, मृत्यु नहीं होती। वह तो हमेशा अपने संबंध में आये हुए भक्तों के बीच ही दिव्य निवास करके रहते हैं। मानव चेतना पर खूब करुणा करके आध्यात्मिक उत्थान के लिये ही धरती पर मनुष्य रूप में प्रगट होते हैं। अहंता, ममता, स्वभाव और माया में फंसे जीवों को सूर्य समान भेद रहित अपना संबंध देकर भक्ति रस में डूबो देते हैं और सुखी कर देते हैं। पार्थिव व लौकिक मूल्यों से परे की चेतना से प्रगटती उनकी कार्य प्रणालिका को हम अपने मानसिक व बौद्धिक मूल्यों से कैसे नाप सकेंगे?

अखंड प्रभु रखे प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, प.पू. साहेब जैसे पवित्र निर्मल संतों ही

इस धरती का मंगल है। उनके मानव स्वरूप में इस धरती पर आने के कारण ही हम उजले हैं। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी जैसी दिव्य विभूति को अपने साथ ही लेकर आये। शूरवीरता का मूर्तस्वरूप लगातार विपरीत परिस्थितियों में भी उनके मुख पर से स्मित जाते किसी ने नहीं देखा....'शाही फकीर' की भांति अपने हाथ में स्वयं ही अपना चश्मा व नैपकिन हाथ में लिये गुनगुनाते हुए अपने प्राणप्रिय शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज की स्मृति की मस्ती में....न कोई इच्छा न ही कोई अपेक्षा.... न मान न अपमान की परवाह.....न यश-कीर्ति की चाह.....केवल शास्त्रीजी महाराज–योगीजी महाराज व उसके अल्प संबंध वालों को राजी कर लेने की एकमात्र आरजु.....स्वयं सम्राटों के सम्राट होते हुए भी खूब छुपे रहकर हमारे जैसे ही सामान्य कक्षा पर आकर रहे। और सबके लिये प्रेम-ममता का निखालिस धोध बहाये ही रखा... बहाये ही रखा। परन्तु उस विभूति को हम सचमुच समझ नहीं पाये....वही हमारी लापरवाही.....हम मौका चूक गये ! अपने असली स्वरूप की किसी को झांकी तक भी उन्होंने न आने दी !

प.पू. काकाजी के दिल और दिमाग में केवल ''वसुधैवकुटुम्कम्'' की भावना ही छलकती थी प.पू. ककाजी केवल 'बहते रहना' ही पसंद करते थे–समय के साथ-साथ भी ! इसलिये समाज में आमूल परिवर्तन की घटना घटाने वाले वे बड़े क्रांतिवीर थे। बहनों को भगवान भजने की व्यवस्था करके देना, बिगड़े हुए युवकों को प्रेम से लाड़ लड़ा-लड़ाकर भगवान के रास्ते मोड़ना–कोई सफल क्रान्तिकारी ही कर सकता है। गुरुहरि योगीजी महाराज के अभिप्राय को समझ कर, स्वरहित बनकर स्वयं का अस्तित्व मिटाकर आज हमारे लिये वे एक स्पष्ट मार्गदर्शन छोड़ गये है। जिस-जिस ने एक बार प.पू. काकाजी का दर्शन किया है उनके मुख से भावपूर्ण बस यही शब्द निकलते हैं– ''**काकाजी जैसा कोई नहीं हो सकता। काकाजी तो काकाजी ही थे।**'' उनका निरंतर भजन, अखंड कथावार्ता आज भी कानों में गूंजती रहती है। प.पू. काकाजी को हमने कई बार कहते सुना है– '**तुम योगीजी महाराज की हाजिर मानकर वर्तते हो? वह अखंड हाजिर ही है, गये ही नहीं। अभी भी हम जो यह बात कर रहे हैं, वह वे सुन रहे हैं। तुम्हें नहीं दिखाई पड़ता, मुझे दिखाई पड़ता है।**' जैसे प.पू. काकाजी के लिये योगीजी महाराज गयेही नहीं थे वैसे ही हमारे लिये प.पू. काकाजी कहीं नहीं जा सकते, बल्कि पहले से अधिक वह सनातन तत्त्व अब भी हमारे बीच हाजराहजुर है ! लेकिन अब उन्हें हमें स्वयं के अनुभव से–तत्त्वसहित पहचान कर अन्तर में प्रगट करना होगा।

हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि प.पू. काकाजी जैसी दिव्य विभूति सामने से गरजू बनकर हमारे जीवन में आई। हमारी पात्रता-कुपात्रता देखे बिना अपनी गोद में बिठाकर प्रभु के पनौते पुत्र बनाने की जिम्मेदारी हमारे बिना कहे अपने सर ले ली !! मुफ्त में मौजरूप अक्षरधाम का सुख, शान्ति, आनन्द देने लगे ही रहे....लगे ही रहे !!! उनका ऋण तो हम कहाँ चुका पायेंगे?

आज भी प.पू. काकाजी का जीवन हमें रोशनी दे रहा है....सिर्फ प्रभु की मूर्ति में रहना, सरल बनना, भेदभाव से परे हो जाना, सुहृद्भाव रखना अभाव छोड़ना, निर्दोषबुद्धि पकड़ना यही उनके जीवन के हमारे लिये छोड़े गये संदेश है। वह जब स्थूल रूप से हमारे बीच थे तब भी यही कहते रहे।

पर जब हम उनकी कही बातें स्वीकार नहीं कर पाये, तो हमारी अज्ञान अवस्था में से हमें जाग्रत करने उन्होंने स्वयं का बलिदान दिया और हमें एक चोट लगाई ! इसलिये आज हमें प्रायश्चित के रूप में अन्तर से प्रार्थना करनी है कि हे करुणावत्सल प.पू. काकाजी ! आप तो सनातन तत्त्व हो, नित्यतत्त्व हो, दिव्यतत्त्व हो, अजन्मातत्त्व हो, पूर्ण तत्त्व हो, अमायिक हो, अज्ञेय हो; पर हम पर अब केवल अनुग्रह करके ही अपने स्वरूप की यथार्थ पहचान कराना। आपका अनुग्रह झेल सकें ऐसा योग्य पात्र बनाना। प.पू. काकाजी की परावाणी में हमने कई बार सुना **'प्रगट की निष्ठा वाले ऐसे पाँच मिलकर काम करें, तो माया कभी पराभव नहीं करेगी और अशक्य काम शक्य बनेगा। जगत में–शास्त्रों में माया परम दुःखदायी बताई है लेकिन भगवान स्वामिनारायण ने माया परम सुखदायी बताई** ! ऐसी बलभरी डंके की चोट पर बात या तो कोई पागल कह सकता है या सच में जिसने प्रभु की मूर्ति अखंडित बसा रखी हो वह कह सकता है।

अब हम सबको मिलकर सच्ची गुरुभक्ति अदा करनी है। प.पू. काकाजी की स्मृति के साथ खूब तीव्र भजन करके उनके खूब नजदीक पहुँच जाना है। उनके नजदीक पहुँचने का सरल उपाय उनके पावनकारी लीलाचरित्रों को निरंतर याद करना, सुनना, गाना और फिर अपने रोम-रोम में प्रगट कर लेना। उनकी यथार्थ महिमा, उनके द्वारा दिये गये आशीर्वाद, उनका हमारे लिये किया गया अनहद् परिश्रम, उनके द्वारा दिये गये सिद्धान्तों व रहस्यों की जुगाली करनी है। उन सिद्धान्तों का जतन-संभाल रखनी है। उनकी परावाणी को जीवंत रखना है। वह जैसा हमें बनाना चाहते थे वैसा बनकर स्वयं का टोटल समर्पण करना है। उनकी चाहना सुहृदभाव के कलश चढ़वाने की थी तो उनका यह स्वप्न साकार करने हम सत्य संकल्प करें, सुरुचि रखें और वही है सही अर्थ में मनाई अपने प्राणप्रियतम की जयंती। महाराज, स्वामी और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों इस प्रार्थना को साकार करने अमाप बल, बुद्धि देवें यही अन्तर की अभीप्सा।

★ ★

ब्रह्मप्रवाह

हरेक के लिये एक Pointer (विरोध) आध्यात्मिक विकास के लिये पू. बापा रखते हैं। 'क' के लिये 'ख' हो सकता है, तो वह पू. बापा का ही कर्तव्य है। सो राजी रहते हुए पास हो जाना है.....अपना ज्ञान अगाध-अमाप-साकार-चैतन्य सभर-सर्वोत्तम है। वह कहीं भी प्रगट हो सकता है। इसलिए अनुभवज्ञान सिद्ध कर ही लेने की लगन रखनी है। अभी मौका अच्छा है। हमें जल्दी से जल्दी गुरुजी के (पू. बापा के) सजाति बनकर उनकी ही अनुवृत्ति के अनुसार जीवन जीने लग जायें वही अन्तर की गहराई से प्रार्थना करनी है। जो कुछ हो रहा है और होगा वह सब ही सिर्फ हमारे ही हित के लिये है यूँ मानकर गुरुजी को (पू. बापा) को याद करके अब काम करते रहना। तुम सब बल में हो सो यहाँ आनन्द है।

12 अगस्त, 1966

प.पू. काकाजी महाराज

★ ★

ताड़देव तीरथ न्यारा.....

तर्ज : बस्ती-बस्ती पर्वत-पर्वत गाता जाये बन्जारा...

दोहा

ताड़देव को गुणातीत ज्ञान की, गंगोत्रीरूप बनाया।
तुम विश्वकर्मा स्वरूप हुए, गुणातीत समाज रचाया।
जय जय स्वामिनारायण का जग में गूंजे नारा।
ताड़देव तीर्थ न्यारा॥

ब्रह्मस्वरूप योगी बापा ने, छोड़ी एक निशानी।
याद करें काकाजी की, बलिदानों भरी कहानी॥
नड़ियाद में काकाजी का, दिव्य प्राकट्य हुआ था।
पूज्य पिता माता ने, दादुभाई, नाम दिया था॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

उस दिव्य तत्त्व ने अपने मन में, ये संकल्प लिया था।
स्वर्ग धरती पर उतरे, ये सपना साकार किया था॥
देश छोड़ परदेश गये, और वहीं पे शिक्षा पाई।
बम्बई में व्यापार किया, एक सृष्टि नई रचाई॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

काकाजी ने योगीजी महाराज को, हृदय बसाया।
गुरुकृपा से काकाजी का, तत्त्व सामने आया।
अक्षरपति योगी ने सोचा, शूरवीर पुरुष है निराला।
यही बात आजमाने को, सेवा की कसौटी में डाला॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

सफल कसौटी में आये, विश्वास गुरु का पाया।
दिव्य समाधि से गुरुदेव ने, साक्षात्कार कराया॥
दिव्य समाधि में, काकाजी ने जो दर्शन पाया।
स्वामी सहजानन्द, व योगीजी को एक बताया॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

एक योगी परिवार बना, प्रभु का संदेश सुनाया।
निष्कामी सेवा से, हरिभक्तों का भाग्य जगाया॥
शूरवीर स्वरूप की निष्ठा से, नव क्रांति आई।
अपनी हस्ती मिटा दी, सो साधु मस्ती पाई॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

योगीजी महाराज ने अपना, वारिस तुम्हें बनाया।
तुम ब्रह्मरूप, तुम गुणातीत आशीर्वाद बरसाया॥
पुरुषोत्तम को सर्वस्व मानकर, दिव्य संबंध बनाया।
गुरुभक्ति निर्दोषबुद्धि का, अनुपम दर्श कराया॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

जीवन था आदर्श, सुहृदभक्ति का रूप काका थे।
निःस्वार्थ प्रेम देने वाले, प्रेरणास्वरूप काका थे॥
पहले जहर पिया तुमने, फिर बाद में अमृत पाया।
प्राणों की कुरबानी देकर, भेददृष्टि को मिटाया॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

ईष्टदेव काकाजी तुमको, कोटि-कोटि प्रणाम मेरा।
मेरे प्राणों में बस जाओ, साँस-साँस में नाम तेरा॥
जय जय जय स्वामिनारायण.....

सभी दिशाओं में काकाजी, आपकी जय जयकार रहे।
तेरे गुणातीत बाग के फूलों से, महका सत्संग रहे, ये महका सत्संग रहे॥जय जय जय स्वामिनारायण....

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	10.6.88	शुक्रवार	एकादशी, व्रत
2.	दि.	12.6.88	रविवार	ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज की 70वीं जन्मजयंती-दिल्ली अशोकविहार मंदिर में मनायेंगे
3.	दि.	24.6.88	शुक्रवार	नौमी, श्री हरिजयंती
4.	दि.	25.6.88	शनिवार	भगवान स्वामिनारायण स्वधामगमन दिन
5.	दि.	26.6.88	रविवार	भीम एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel. : 7128838
Printed at R.P. Printers, Shahadra, Delhi-110 032